

Apani Or Drushti Rakhe

Date : 21st December 1975
Place : Mumbai
Type : Seminar & Meeting
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 11
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

सहजयोगियों का प्रेम इतना अगाध है कि शब्द सूझ नहीं रहे कि किस तरह से बात की जाए। आपको पता है कि संसार में हर जगह आज सहजयोगी उत्क्रांति की ओर, evolution की ओर बढ़ रहा है। बहुत से सहजयोगी बड़ी ऊँची दशा में चले गए हैं। आनंद के स्रोत उनके अंदर बह रहे हैं। कुछ तो बिल्कुल निमित्तमात्र हो करके ही संसार में एक विशेष रूप से कार्यान्वित हैं। लेकिन हर एक देश की एक अपनी अपनी, मैं देखती हूँ कि परिपाटी है। मानव हर जगह एक ही है। इसमें कोई अंतर नहीं है और सहजयोग एक अन्तर्गत की ही व्यवस्था है जिसका कि बाह्य से कोई सम्बंध ही नहीं। तो भी चित्त जो कि प्रकृति का एक स्वरूप है, जिसे हम कुण्डलिनी के नाम से जानते हैं, उसके अंदर आप जिस जिस देश से गुजरे हैं, जिस जिस जन्म से गुजरे हैं, जिस जिस प्रणालियों से गुजरे हैं, जिस जिस व्यवस्थाओं में से आपका व्यवहार हुआ है, उस सभी का टेपरिकार्ड है। इसके कारण हर एक देश का, मैं देखती हूँ, मानव थोड़ा थोड़ा सा भिन्न हो जाता है।

बड़े आश्चर्य की बात है कि मानव जितना कुछ मिथ्या है उसे कितने जोर से पकड़ लेता है और सत्य को पकड़ने में कितना कतराता है! कितना ढीला होता है! इतने मुश्किल से अपनाता है सत्य को और असत्य को बहुत बुरी तरह से अपने अंदर पकड़े रहता है। आश्चर्य इसीलिए होता है। पहले तो मैं सोचती थी कि मानव अपना नाम, अपना गाँव, अपनी शिक्षा, अपना ओहदा, इन सब चीजों को बड़ा महत्वपूर्ण समझता है लेकिन अन्तर्गत में कितना गहरा इसका असर है उसको देखते ही बनता है। जितने जल्दी ये चीज अपने अंदर से छूट जाती है,

जितने जल्दी मिथ्या हमारे अंदर से मिटता जाता है उतनी ही जल्दी हम लोग उस चित्त को हलका कर लेते हैं। सहजयोग में यही चित्त जो है, ये चित्त परमेश्वर से जाकर मिलता है। यही चित्त उस सर्वव्यापी, परमेश्वर के प्रकाश में जा कर डूब जाता है। यही मानव का चित्त जो कि हम प्रकृति का रूप समझते हैं, प्रकृति का जो ये फूल है वो परमात्मा के प्रेम सागर में विसर्जित हो जाता है। लेकिन ये चित्त कितना बोझिल है, कितना अव्यवस्थित है, कभी कभी देखते ही बनता है।

सहजयोग की पहचान एक ही है कि आप कितने आनंद में उतरे, आप कितने शांति में उतरे, आप कितने प्रेम में उतरे। मिथ्या में रहने वाले लोग सहजयोग को नहीं प्राप्त कर सकते। हमारी मेहनत से क्या हो सकता है? ज्यादा से ज्यादा हमारे कुण्डलिनी पर बिठा कर आपको हम वहाँ छोड़ देंगे लेकिन आप बार बार गिर आते हैं। उसका आनंद भी नहीं उठा पाते जहाँ आपको पहुँचाया है। हर एक देश में एक अजीब-अजीब तरह की समस्याएं हैं। अपने देश की समस्या है, इसको पहले समझ लेना चाहिए क्योंकि हमें अपनी समस्या पहले समझनी चाहिए। अपने प्रति। दूसरे देशों की समस्या है उसे भी समझना चाहिए। जैसे कि अभी यू.के. में मैंने अपना कार्य बहुत धीमा शुरू किया है। बहुत थोड़े लोगों को हाथ में लिया है। ज्यादा लोगों को लेना नहीं चाहती थी। सोचा पहले 25 आदमी ऐसे जमा लिए जाएं जो कि सहजयोग में जम जाएं। आपको आश्चर्य होगा कि बड़ी पहुँची हुई विभूतियाँ हैं वो। नितांत श्रद्धा है उनकी सहजयोग पर। वो सोचते हैं कि सहजयोग के बगैर कोई इलाज है ही नहीं। आज की दशा में पहुँचने पर सहजयोग

अत्यन्त अप्रतिम है, Dynamic चीज है और वो कोई प्रोग्राम है सहजयोग का तो उनके लिए उससे बढ़कर महत्वपूर्ण संसार में कोई चीज है ही नहीं और घण्टों तक वे उसी में लगे रहेंगे कि सहजयोग में अपने को जैसे की ये पता नहीं क्या परमात्मा की चीज आई हुई है जो दुनिया भर में देने की है, और वास्तविकता ये है ही। इसमें कोई शंका नहीं। लेकिन इतनी बड़ी वास्तविकता समझने पर भी उनका एक बड़ा भारी, मैं दोष तो नहीं कहूँगी, लेकिन कारण है। कारण वो भारतवर्ष की योग-भूमि में पैदा नहीं हुए। परमात्मा ने ऐसे सज्जनों को न जाने क्यों उस भोग भूमि में पैदा किया?

इस योग भूमि में आप पैदा हुए हैं और वो पैदा हुए हैं उस भोग भूमि में जहाँ पर के उनके उपर कोई भी, किसी भी प्रकार का संस्कार है ही नहीं। उनको ये भी पता नहीं है कि माथे पर सिन्दूर अगर लगता है तो वो नाक पर लगा रहे हैं या सर पर लगा रहे हैं। उनको पूजन की विधि मालूम नहीं, अर्चन की विधि मालूम नहीं। परमेश्वर के बारे में कुछ भी मालुमात नहीं। उनको नीचे बैठना तक नहीं आता। कुछ भी वो नहीं जानते। इतने अनभिज्ञ हैं कि आरती बजाने पर ताली कैसे देना चाहिए ये भी मालूम नहीं। और इतनी बड़ी-बड़ी विभूतियाँ हैं, इतने आंतरिक हैं वो लोग! इतने प्रेममय हैं। इतना उनको मेरे ऊपर प्रेम है, इतना आदर है मेरे प्रति कि मैं आश्चर्य करती हूँ। सामने गुजरते वक्त कभी भी सीधे नहीं गुजरते हैं, झुक करके। इतना मेरे प्रति प्रेम उनको है कि संसार की कोई सी भी चीज मेरे आगे उनको तुच्छ लगती है। इतना उनको मेरा महात्म्य है कि समझ में नहीं आता कि किस तरह से मेरे आदर को पूरा करें। इस पर बड़ा आश्चर्य होता है कि वो इस चीज का इतना महात्म्य समझते हैं और अपने प्रति अत्यंत उदासीन हैं,

अपने पीछे डण्डा लेकर लगे हुए हैं। मैंने उनसे कहा कि आप अपने को जूते मार सकते हैं, आपके ऊपर जो बाधाएँ हैं उनके लिए। मैंने 108 बार कहा, वो 3 बार 108 मारते हैं। जहाँ देखो वो अपने को मारते रहते हैं। हमसे कहने लगे कि कोई गालियाँ सिखाओ हम अपने को देना चाहते हैं। ये हम ही खराब हैं, कोई individually बात करते हैं। कभी मैंने देखा नहीं कि किसी की शिकायत या किसी की कोई बात। अपने को ही कहते हैं। और दूसरे के बारे में यही कहते हैं कि वो इतना बढ़िया आदमी है कि हमें अपने पे लज्जा आती है। वो कितना बढ़िया है हम तो अपने पर शर्मिन्दा हैं। उसकी तरफ दृष्टि ही नहीं करते जिसको वे गलत सोचते हैं। अपने ही को गलत समझते हैं पूरे समय।

आपको आश्चर्य होगा कि अपने ही पीछे डण्डा लेकर लगे हुए हैं। यहाँ मैं देखती हूँ कि उसके बिल्कुल उल्टी बात है। सारी दृष्टि अपनी ओर लगा कर इतनी तपस्विता उन लोगों के अन्दर है और छोटे बच्चों जैसे मासूम बिल्कुल। मैं आने लगी तो झर झर झर झर आँसू उनके बहने लगे। सहजयोग उन पर डाला। सब कुछ कर लिया पर उनके आँसू नहीं रुके। इतनी सहज सरल उनकी भावना है। अभी तो सिर्फ 21 आदमी से ज्यादा नहीं ऐसे लोग, मैं जोड़ पाई हूँ। लेकिन है ये बात। और जिसको कहते हैं genuine असली। खुद मैं genuine नहीं हूँ, ये वो समझते हैं। कहते हैं कि कोई मेरे अंदर आकर कह रहा है कि मैं genuine नहीं हूँ। नहीं हूँ मैं genuine। माताजी मेरे अंदर ये कपट है। मैं इस झूठ को लिए हुए हूँ। पूर्णतया दिल को खोलकर कहते हैं और उनको कोई बात में शर्म नहीं आती। अपने को बुरा कहने में उनको जरा भी शर्म नहीं आती। लेकिन दूसरों को judgement वो

बिल्कुल नहीं करते। फिर ये भी बताते हैं कि हाँ मैंने ये गलत काम क्यों किया, इसकी वजह यह थी। अपना ही सब बताएंगे कि मेरे बाप ऐसे थे, एक बार ऐसा हुआ था, psychologically ये बात है इसलिए मैं ऐसा करता हूँ। मैंने ये बात ऐसे क्यों करी, इसका कारण वे बताते हैं कि ऐसा हुआ था इसलिए मैं ऐसा करता हूँ। एकाध दो लोग ऐसे भी आते हैं जिन पर बहुत बाधा थी। वो अपने दिन नहीं भूलते हैं बिल्कुल भी और चुप रहते हैं। कहते नहीं कुछ, कहते हैं कि नहीं, अभी हममें जो असर थे वो निकलने दो पूरे। हो सकता है कि कहीं छिपे हुए असर हों। इतनी मौन आत्मसात करते हैं। लेकिन उनके अंदर ये कमी है कि वो पूजन भी नहीं जानते, अर्चन भी नहीं जानते। बेचारों को समझ में नहीं आता। मैंने उनसे कहा कि मैं कुछ पैसा नहीं लेती हूँ कुछ भी नहीं लेती हूँ।

एक दिन ऐसे ही मैंने कहा कि मुझे ये डबलरोटी खाते थे वो मैंने कहा मुझे ये बहुत पंसद आती है तो जितने लोग आएंगे एक एक डबलरोटी ले कर। मैंने कहा इतनी सारी डबलरोटी कौन खाने वाला है? मैंने ऐसे ही कह दिया था कहने को। ऐसे थोड़ा है कि मैं रोज खाती हूँ। उनकी समझ में नहीं आता कि किस तरह से समर्पण करें। सब बहुत पढ़े लिखे विद्वान, सब कुछ जानते हैं। आपके सारे शास्त्र वास्त्र उन्होंने जितने आपके अंग्रेजी में लिखे हैं, सब पढ़ डाले। उनके लिए सहजयोग समझाना कोई मुश्किल नहीं। वो कहते हैं कि ये जड़ से सूक्ष्म में उतरने का तरीका सहजयोग है। उन लोगों ने मेरा introduction लिखा है। अभी किताब आप पढ़कर दंग रह जाएंगे। सारे दुनिया के philosophers को लाकर उन्होंने माँ के चरणों में डाल दिए। ये सब कुछ भी नहीं है। इन्होंने क्या? इन्होंने तो प्रश्न खड़े किए, माँ ने उसका उत्तर दिया।

अपने भाग्य को सराहते हैं और कहते हैं कि हमारे परम भाग्य हैं कि हम पहले माँ से मिले और कहते हैं कि इस धरती में इतने लोग आप को ऐसे मिलेंगे। एक दिन सहजयोग बहुत ऊँचे पद पर पहुँचने वाला है, इसमें कोई शंका नहीं। लेकिन आप हमारी नींव हैं। नींव के पत्थर कितने जबरदस्त होने चाहिए? पहली चीज हमें ध्यान में लानी चाहिए कि क्या हम genuine हैं? अपनी ओर नजर करें, दूसरों की ओर नहीं। अपनी ओर नजर करें। क्या हम genuine हैं? देखिए कि उनको कोई मंत्र भी बोलना नहीं आता। उनसे श्री कृष्ण भी बोलना नहीं आता बेचारों को बहुत मुश्किल से राधा कृष्ण कह पाते हैं। आपके लिए कितना सरल है कि आप अपनी विशुद्धि को साफ कर लें। राधा-कृष्ण आपने कह दिया हो गया काम खत्म। अब वो राधा कृष्ण नहीं कह सकते बेचारे तो कृष्ण जी जरा नाराज हो जाते हैं बात-बात पर। उनका pronunciation भी ठीक नहीं, और आपको आसानी से मिल जाते हैं। उनको कुमकुम लगाना नहीं आता। उनको सिन्दूर का मालूम नहीं, उनको फूल चढ़ाना नहीं आता, उनको गणेश जी बनाना नहीं आता, उनको स्वास्तिक बनाना नहीं आता, हर बार उल्टी बना देते हैं बेचारे। कभी उन्होंने जाना नहीं ये सब चीजें। लेकिन अत्यंत शरणागत होते हुए भी वे लोग उसे नहीं पाते जिसे तुम लोग पा चुके हो। तुमने बहुत पाया है। लेकिन उसका महात्म्य अभी तक बहुत कम लोगों के आता है समझ में। ये नहीं कि उनको सहज मिल गया है, ये नहीं कि उनको मुफ्त में ही दिया है। उन्होंने भी ऐसे ही पाया है जैसे आप लोगों ने पाया है। लेकिन उनका मेरे प्रति जो प्रेम है इतना नितांत है, लगता है कि जैसे जन्म-जन्मान्तर का वो सम्बंध समझ गए हैं और तुम लोग अभी तक समझ नहीं पा रहे हो। अपने

ही में क्यों सीमित हो? सब तुम एक ही शरीर के रोम-रोम होते हुए भी, एक ही शरीर में स्पंदन होते हुए भी अलग अलग महसूस करते हो। और वहाँ ये प्रश्न ही नहीं खड़ा होता team work का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता। आपस में एक वहाँ पर लड़का है जिसने smoking शुरू की, सब लोग उसको फाड़ खा गए। उसको इस तरह से उन्होंने ठिकाना किया कि उसकी छूट गई smoking। उसके सारे arguments ठीक किए, उसकी पूरी मदद की, जैसे ही वो smoking करे उसको अपने पास बुलायें, उसके साथ बैठ जाएं। उसके घर में जाकर सिगरेट-विगरेट निकाल दिये पैसे ले जाकर छिपा दिए। सिगरेट की smoking नहीं थी उसकी क्या वो करता। और कहने लगे कि अब अगर तुमने और किया तो पुलिस में inform कर देंगे। अच्छा वो लड़का इसका बुरा नहीं मानता। वो कहता कि हाँ भई तुम कर दो कुछ। वो लड़का खुद कहता है और भागता है उस चीज से दूर और उन लोगों के पास आ जाता है और कहता है कि भई मुझे बचाओ। इस वक्त मुझे आ रही है वो इच्छा। इस वक्त तुम मुझे बचा लो, बचा लो इस वक्त। अपने को correct करने के लिए कितनी मेहनत वो कर रहा है! यहाँ तो आपका समाज ही corrected है। कितनी आपको, आपको पता नहीं कि आप कितनी स्वर्गभूमि में रह रहे हैं! जहाँ पर माँ बहन का पता नहीं, इतनी वहाँ गंदगी है उस देश में जहाँ पर घर घर में शराब चलती है। इतने गंदे आपस में सम्बंध हैं। किसी के घर का ठिकाना नहीं, माँ का ठिकाना नहीं, बाप का ठिकाना नहीं। उससे पूछो भई तुम्हारी माँ कहाँ है? वो कहते हैं पता नहीं कहाँ चली गई, उसने किससे शादी कर ली! चरित्रहीन, मूलाधार चक्र सबका चौपट। ऐसे देश में पैदा हो करके भी, गणेश को ले कर आए। माँ हमें

गणेश दो। गणेश के सामने सर पटक पटक कर पटक कर, कान पकड़ पकड़ के पश्चाताप की पूरे धुन में लगे। और उसमें एक वीरता भरी है। इतना बड़ा उनके अंदर जागरण अपने प्रति और दूसरों के प्रति भी। और सहजयोग के ऐसे ऐसे अनुभव और ऐसी ऐसी बातें उन्होंने बताई। आपके पास एक चिट्ठी मैंने भेजी थी, वो उन सब लोगों ने मिल करके उसका पता लगाया। मेरे भी असलियत का पता उन्होंने लगाया। अभी तक आप के नहीं नज़र में आई बात पर उनके आ गई। वो समझ गए ये बात है, ये ये चीज है। कहने को महामाया है, अंदर बात ये है।

उन्होंने इतना आनंद नहीं पाया है। लेकिन सर्वस्व लगाकर वे लोग लगे हुए हैं। वो समझ गए हैं कि उत्क्रांति का समय आ गया है, सतयुग दरवाजे पर है। और वो ये भी समझ रहे हैं कि गर सतयुग का दरवाजा नहीं खुला तो दूसरा संहार का दरवाजा खुलने वाला है और सबकी जिम्मेदारी है इस चीज की। इसकी जिम्मेदारी वो सोचते हैं कि हमें ये करने का है। वो जिम्मेदार हैं सहजयोग के लिए। मजाल है कोई सहजयोग के विरोध में एक अक्षर बोल दे। आपस में तो बोलने का कोई सवाल ही नहीं पर कोई बोलता है तो फौरन उसको वहीं झाड़ कर रख देते हैं। उनसे अगर मैं कहूँ कि 24 घण्टे तुम बगैर खाना खाए बैठे रहो, बैठे रहेंगे। लेकिन इसका ये अर्थ नहीं कि आप लोग कुछ कम हैं। आप लोगों में से किसी किसी ने जो height साधी है, जिस height पे पहुँच गए हैं जिस ऊँचाई पर पहुँच गए हैं, बहुत कमाल की चीज है। लेकिन सबको अपने अपने लिए बड़ा घमण्ड है ये बड़ा problem है। चित्त को एकाग्र करना भी एक अर्थ रखता है। इसका मतलब ये नहीं कि यहाँ देखो वहाँ देखो। एकाग्र तभी होता है चित्त जब उसके

ऊपर का सारा मैल बह जाता है। सब हल्का हो जाता है।

अब अपने देश के जो curses हैं या अपने देश के जो समझ लीजिए बड़ा भारी शाप है अपने देश पर कि हम लोगों के चित्त पर एक बड़ी भारी चीज है जिसे कि मैं कहती हूँ, Sins Against the father, अपने बाप प्रभु परमेश्वर के खिलाफ हमने पाप किया। वो कौन सा पाप है? कि हर समय सोचना कि हम दरिद्र हैं, हम गरीब हैं, हमारे पास पैसा नहीं है। हमारा कैसा होगा, हमारे पेट का कैसा होगा। बिल्कुल भिखारी पन की बातें। हमारा खर्चा कैसे चलेगा? हमारे बाल-बच्चों का क्या होगा? गर आपका परमात्मा पर विश्वास है तो कम से कम इतना तो उस पर छोड़ दो कि वो तुमको खाना पीना तो देगा, नहीं तो ऐसे परमेश्वर पर विश्वास करने से फायदा क्या। ये बड़ा भारी हम लोग पाप करते हैं। परमात्मा पर खाना पीना और ये व्यवस्था गर हम लोग छोड़ दें तो हिन्दुस्तानी आदमी बहुत ज़ेचा उठ सकता है। दो तरह के पाप हैं। एक पाप तो ये है कि बाप के पितृत्व पे शंका करना और दूसरा मैं कहती हूँ कि Sin Against the mother, वो वहाँ पर हो रहा है, जिसमें चारित्रिक दोष, indulgences भोग, घर गृहस्थी का तोड़ देना, बेछूट हो जाना, ये महादोष हैं। दोनों नरक के रास्ते सीधे जाने की व्यवस्था है।

पैसे के लिए कुछ भी करो! पैसे के लिए जो चाहे वो गलत काम करो वो ठीक है। ये हिन्दुस्तानियों का काम हैं। मैं सरकारी बात नहीं कर रही हूँ, मैं परमात्मा की बात कर रही हूँ परमात्मा के राज्य की बात कर रही हूँ। जब आप परमात्मा के राज्य में हैं तो देगा तो देगा नहीं तो नहीं देगा। इतनी कम से कम वृत्ति ले आने में क्या लगता है? करेगा नहीं तो नहीं करेगा। जैसे राखहु तैसे ही रहिहु। सहजयोगी

गर इतना एक कर ले कि जैसे राखहु तैसे ही रहिहु। जैसे भी रखो मंजूर है हमको। देख लेते हैं तुम कैसे रखते हो और हम कैसे रहते हैं। हर एक चीज का एक मजाक हो सकता है। हर एक चीज में एक आनंद आ सकता है। कैसे रखोगे? जैसे राखहु तैसे ही रहिहु। चाहे पैदल चलाओ तो पैदल चलेंगे, चाहे घोड़े पे बिठाओ तो घोड़े पे चलेंगे। ऐसी मस्ती में जब आप आ जाइएगा, बाकी तो भगवान की कृपा से ऐसी योगभूमि में आप पैदा हुए हैं कि बाकी का हिस्सा ठीक है। आपके माँ-बाप ठिकाने से हैं आपके बीबी बच्चे ठिकाने से हैं, आपका चरित्र भी इतना गड़बड़ शड़बड़ नहीं है। है कुछ लोगों का, वो भी गड़बड़ है पर इतना गड़बड़ नहीं है, ठीक हो सकता है वह भी। वहाँ पर इतना ज्यादा दूसरा वाला पाप है, सबकी आँखें यो यों यों यों औरतों आदमियों की चलती रहती हैं हर समय माने बाधा है उनके अंदर। एक से दूसरे की बाधा जा रही है।

एक औरत आई उसने आदमी को देखा आदमी ने औरत को देखा। ये ही चलते रहता है वहाँ पर। चक्कर ही ऐसा है। हमसे कहने लगे ये माँ हम सब के बाधा घुस जाती है करे क्या? मैंने कहा आँख जरा नीची रखें। लक्ष्मण जी सीताजी के सिर्फ पैर देखते थे। नीची आँख। धीरे धीरे आपने आप ये बाधा छूट जाएगी। जब आप ऐसे धंधे ही नहीं करिएगा तो काम क्या है बाधा का? अपने आप जो भूत आपके अंदर में घूम रहा है, आपके अंदर काम कर रहा है वो अपने आप ही वहाँ से भाग जाएगा। गर आप इधर उधर आँख नहीं घुमाइयेगा तो एकदम से भूत भाग जाएंगे। और जब तक आप अपनी आँख घुमाते रहिएगा तो वो भूत वहाँ बैठे रहेंगे। फौरन आँखे सबकी यों। रास्ते पर चलते हैं आँखे यों करके। माँ ने कह दिया, मान लिया। ये

बच्चों के लक्षण हैं। आपके भले के लिए, कल्याण के लिए कह रही हूँ। आपको भी समझना है कि सहजयोग में हमने जितना पाने का है वो पाना है इसी जन्म में। हमको पाने का है किसी और को नहीं, हमको ही पाने का है, हमको लेने का है। दूसरों को नहीं, दूसरों की चिन्ता छोड़ो। अपनी सोचो कि हमने कितना पाया। हम इसके कितनी गहराई में उतरे। हमने क्या पाया है? हमने अपने साथ क्या व्यवहार कर रहे हैं? हम क्यों ढोंग कर रहे हैं अपने साथ? हम क्यों अपने को ठगा रहे हैं? हम क्यों झूठ बोल रहे हैं? हम अपने साथ क्यों ऐसी ज्यादती कर रहे हैं? हमने क्या पा लिया? अरे सारा भण्डार खोल दिया है, आ जाओ अंदर। जैसे भी हो आ जाओ। हम नहला धुलाकर तुमको बिठा देंगे। फिर सोच क्यों? कितने गहरे उतरे हम? गंगा की शीतल धारा में कितने अंदर वहते गए हम। वो तो बह रही है पूरी तरह से कि लो बेटे लो, लो जो लेना है लो। कितनी गागर भर ली हमने? चित हमारा इधर उधर दौड़ रहा है। अपनी ओर दृष्टि करते ही तुम समझ जाओगे कि तुमने ही अपने साथ छलना की किसी और ने की नहीं। ये बड़ा भारी अंतर है। सहजयोग के लिए नुकसानकारी है। अपनी ओर दृष्टि न रखना सहजयोग के लिए बहुत बड़ी नुकसान की चीज है और अपनी ओर उसी मनुष्य की दृष्टि होती है स्वभावतः ही जो जन्म-जन्मांतर से खोज रहा है। वो जानता है कि मेरी गलतियों की वजह से ही मैंने नहीं पाया था। अब और गलती मैं नहीं करूंगा। जैसे कुन्दधर के अंदर आप बंद है और निकलने का रास्ता नहीं। जिसने दस जगह दरवाजे पर ठोका मारा है जिसका दस जगह सर फूटा है वो सोचता है नहीं रास्ते की ओर नजर रखो। दरवाजे की ओर नजर रखो। सब दूर से मार खाने

दो। दरवाजे की ओर देखो। वो कुछ और नहीं जानता है सिर्फ ये जानता है कि हाँ मैंने पाया है न, मैंने देखा है न, मुझे मालूम है, vibration आ रहे हैं मेरे अंदर से। सहस्रार मेरा छिदा है। होता है। मैंने जाना है। उसी बात को पकड़े हुए हैं, उसी दरवाजे को पकड़े हुए हैं। फिर माँ कुछ भी कह दे। ये नहीं कि मैं ये नहीं मानता, वो नहीं मानता। जो भी कह रही हैं हर एक बात सही है और जैसे ही वो कहते हैं सारा का सारा उनके आगे ज्ञान आते जा रहा है।

आप लोगों की बैठक बननी चाहिए। बैठक जमनी चाहिए। उनसे तो बैठक शब्द नहीं मैं कह सकती कि बैठक जमाओ। बेचारे बैठक शब्द भी नहीं जानते। अंग्रेजी भाषा ऐसी क्या काम की है उनकी कोई ऐसी संस्कृति ही नहीं है। उनका कोई ऐसा culture ही नहीं है ऐसी वहां बात ही नहीं है। कितने अभागी लोग हैं और बड़े बड़े साधुसंत हैं और आप लोग कितने सौभाग्यशाली हैं। आप ही के देश में मेरा जन्म हुआ है। इसी योगभूमि में मेरा जन्म हुआ है लेकिन आपने क्या पाया है ये देखिए। दूसरों ने क्या पाया है? दूसरों ने क्या किया है, दूसरों ने क्या कहा? दूसरे कहाँ हैं। ये वगैरह से मतलब नहीं। आपने क्या पाया है। जैसे ही आपने पा लिया आप निमित्त हो जाएंगे परमात्मा के। आप हैं क्या? आप तो उसके अंदर एक निमित्त मात्र हैं। 1000 आदमी मुझे चाहिए, मैंने कहा है, जो इस सहस्रार पर बैठ जाएं। 1000 घोड़े पर बिठाने वाले 1000 आदमी ऐसे चाहिए जो बिल्कुल न पकड़े। जो निर्लेप हों। गर आप सहजयोग के लिए कुछ कर रहे हैं तो अपने ही लिए तो कर रहे हैं। ऐसा तो कोई हो जो कहे कि भाई मैं गया मैंने इतना बाजार में अपने लिए सोना खरीदा। इतनी मैंने चीजें खरीदी, इतनी मैंने मेहनत की। आपने इतनी जो भी

मेहनत की जो भी आपने किया अपने ही लिए तो किया है। किसी और के लिए नहीं। आपने देखा है न। जो भी कुछ आपने किया है उसका लाभ अपने ही को है। बहुत से लोग हो गए संसार में, उन्होंने पाया। एकाध दो एक युग में हुए हैं। बहुत थोड़े आप जानते हैं आपसे मिले हैं कितने लोग realized है? बहुत थोड़े से ही। और आजकल तो कलयुग का बिल्कुल घोर निनाद चल रहा है। इस वक्त तो पशु ही हैं अधिकतर। बिना पूँछ के पशु बहुत सारे हैं। पर इसी कलयुग में इसी कीचड़ में एक विशेष रूप से कार्य होने वाला है और ये आप जानते हैं ये हो रहा है। ऐसे में आपको चाहिए कि जो ले सकते हैं लें, नहीं तो ये जो क्रांति का process है Evolution का process है उसमें से आप फेंक दिए जाएंगे। वो समय दूर नहीं है। 79 मैंने बता दिया है कि 79 तक ही ये कार्य होगा उसके बाद 99 साल तक सब कुछ पूरा mature हो जाएगा। हाँ आपकी अक्ल पर है नहीं तो कलयुग भी आप ही की बदौलत पनपेगा। आप लोग अगर इसको नहीं चलाना चाहेंगे तो जो विध्वंस विनाश होगा उसका बोझ आप ही के सर पर है।

अपनी अक्ल को ऐसा लगाइए, अपनी बुद्धि को सुबुद्धि में लाइए और सोचिए कि हमने गंगा जी से क्या लिया? क्या पाया? क्या पाने का है? आपने बहुत आनंद पाया है? उस आनंद का जो भी क्षण आपने पाया है उसको याद करते रहना चाहिए और मन से कहना चाहिए कि उसी क्षण में हमेशा रहना है मुझे। चिपक जाएंगे आप वहाँ पर। और जो भी इधर-उधर के फालतू के विचार आ रहे हैं उनको बंद करिये। किसी भी उम्र के आदमी को ये मना नहीं है। किसी भी वर्ण के आदमी के लिए ये मना नहीं है। किसी भी व्यवस्था के आदमी के लिए ये मना नहीं है। लेकिन अधिकतर लोग अपने हाथ

से अपने पैर काट रहे हैं। गुटबाजी कर रहे हैं। क्या करूँ, मेरी समझ में नहीं आता है। एकदम बेवकूफी की बातें कर रहे हैं। अरे तुम अलग हो कहाँ। मैं यहाँ एक जरा सी उंगली घुमाती हूँ तो सबके सहस्रार चलते हैं। थोड़ा सा पाँव झनकाती हूँ तो सबके सहस्रार में झनकार आते हैं।

तुम लोग अलग कहाँ हो जो अलग अलग कर रहे हो। क्या तुम समझते नहीं? तुम अलग हो ही नहीं सकते। ये तो ऐसा है कि एक हाथ तोड़ के तुम उधर ले जाओ और वो कहे कि हाँ भई मैं इस हाथ को अलग करके बड़ा भारी कार्य करूँगा। मुझे बड़ा दुख हो रहा है इस पूरे शरीर के साथ चिपकने में तो मैं अलग हो जाऊँगा। इसी तरह की ये बात होती है। अपनी अगर मुक्ति चाहिए हो तो मनुष्य ऐसे ही एकता से काम करता है। लेकिन जिस आदमी को ये समझ में आ गया कि एक सामूहिक व्यक्तित्व के collective personality के आप एक अंश है उसी क्षण सारा काम ठीक हो जाता है। आप हैं आप जानते हैं, आप हैं आप जानते हैं, आप हैं उसमें। सारे सहजयोगी जानते हैं। कोई England से चला आए, कोई अमेरिका से चला आए, कोई हिन्दुस्तान से चला आए। जब बात करेगा तो यही कि आज्ञा पकड़ रहा है कि हृदय पकड़ रहा है कि फलाना पकड़ रहा है। सब कोई जानते हैं ये बात, ये तो कोई भी और नहीं जानते लोग। उनको तो ये भाषा ही मालूम नहीं। नई भाषा है, आप लोगों ने सोचा है कभी।

फौरन आपको पता हो जाता है किसका क्या पकड़ रहा है कौन कहाँ कितने गहरे पानी में है, क्या हो रहा है, क्या नहीं हो रहा? फर्क इतना ही है कि अपनी ओर दृष्टि कम होने की वजह से अपने लिए क्या हो रहा है वो नहीं दिखाई दे रहा, दूसरे का दिखाई दे रहा है। ये तो ऐसा ही है कि

ये गर हाथ सड़ रहा है और ये हाथ इस हाथ का नहीं सोच रहा है तो ये तो सड़ जाएगा ही और इस हाथ का क्या फायदा होने वाला है? किसी को भी नीचे गिरना नहीं है खुद भी और दूसरा भी नहीं गिरना चाहिए। लेकिन आप खुद मत गिरिए, पहली चीज ये है। अव्याहत चल रहा है ये सारा काम। सारे चारों तरफ छाया हुआ है। जिसको कि unconscious कहते हैं जिसको कि प्रणव कहा जाता है, जिसको कि मैं Divine Love कहती हूँ। चारों तरफ आपकी मदद के लिए मंडरा रहा है चारों तरफ आपकी मदद के लिए। भैरव नाथ जी इस वक्त यहाँ बैठे हुए हैं। यहीं हनुमान जी बैठे हुए हैं। आपके साथ हजारों आदमी लगे हुए हैं यहाँ पर। आपके लिए मेहनत कर रहे हैं। जिस अनुभव को आपने पाया है संसार में कितनों ने पाया था आजतक, बताइए।

बड़े बड़े साधू सन्यासी हो गए। हो गए होंगे, किसी ने भी सामूहिक चेतना पर इतना clearly जाना है जितना तुम लोग जानते हो? कितनी किताब पढ़ डालो। वो मुझसे पूछते हैं साधू सन्यासी बड़े बड़े साधू उसमें से किसी किसी ने जन्म लिया है किसी किसी ने नहीं लिया, कि इनको किस सिलसिले में आपने दिया है? बहुत बड़ी चीज है। मैंने अपने सहस्रार से तुमको जन्म दिया है। उन लोगों को नहीं दिया था। उनके उपर उतर के दिया था। तुम लोगों को अपने हृदय में स्थान देकर अपने सहस्रार से जन्म दिया है। कितनी बड़ी तुम्हारी स्थिति है। ऐसा तो श्री गणेश को भी जन्म नहीं दिया था जैसा कि तुमको दिया है। ये विशेष वस्तु है न? अत्यंत प्रेम से प्लावित करके दिया हुआ है। अपने से प्रेम करो। जब अपने से प्रेम होगा तभी अपना दोष दिखेगा। जब आपको साड़ी से प्रेम होता है तो आप साड़ी में लगे हुए सभी दोष

को निकाल देते हैं। जब देखते हैं कि साड़ी में छेद हो गया है तो आप उसको सी देते हैं। आपको जिस चीज से प्रेम होता है उसको आप ठीक कर देते हैं और जिस चीज से आपको प्रेम नहीं होता उसको आप छोड़ देते हैं। हमने आपसे इतना प्रेम किया, आपने अपने से कब प्रेम किया? अपने प्रति प्रेम करें। जिस दिन ये लहर एक तार हो जाएगी एक इसमें हम लोग आ जाएंगे, वो दिन की मैं राह देख रही हूँ। अब आप लोगों को इसमें कोई शक नहीं रहा, क्योंकि vibration आप लोगों ने जाने हैं। इसमें तो किसी को शक नहीं है। साक्षात् शंकर हैं आप भी। (मराठी)

कुछ कुछ लोग बहुत पहुँच गए और सब उन्मुख हैं। उन की ओर देखिए जो ऊपर उठ गए हैं। नजर करो उनकी ओर और ऊपर बढ़ो। खट से खींच लिए गए ऊपर को जैसे मछलियों को एक ही तार में बाँध करके खींचा जाता है वैसे ही खींच लिए गए। लेकिन पहले उस जाल में फँसे रहो प्रेम के। माँ के प्रेम के जाल से नहीं निकलना। अपनी अपनी अकल मत लगाओ। तुम लोगों की अकल मैं जानती हूँ कहाँ तक चलने वाली है। तुम लोगों को मालूम था कि कुण्डलिनी कहाँ है क्या है? कुछ नहीं मालूम था ना? फिर तुम कुछ बड़े हो, बुजुर्ग हो, उम्र में बड़े होओगे मेरे से, लेकिन मैं तो हजारों साल की पुरानी हूँ। तुम ऐसे कैसे बड़े हो सकते हो? मेरे तो बेटे ही हो न, मेरे तो बच्चे ही हो। मैं चाहती हूँ कि इस आनंद के सागर में खुद तो लुट ही जाओ और सारे संसार की व्यवस्था करो। थोड़ा सा धक्का देने की जरूरत है, थोड़ा सा अपने को पकड़ने की जरूरत है, अभी नैया पार होगी। थोड़ी सी बगड़-दगड़ चल रही है, आगे जाती है पीछे जाती है। अभी भी सहजयोग की नैया मैं नहीं कहती कि किनारे पर पहुँच गई है। अभी खींच

रही हूँ आप लोगों के through, आप ही लोग इधर उधर खींचते हैं कभी कभी। कुछ उधर खींच रहे हैं कुछ इधर खींच रहे हैं। नाव को किनारे पर लाना है। पर group बाजी करना नहीं है। ये आदमी अच्छा नहीं है, वो आदमी अच्छा नहीं है। उसमें ऐसी ज्यादाती हो गई, उसमें ये गड़बड़ हो गई, उसमें ये गड़बड़ हो गया। मुझे कोई भी शिकायत नहीं लगाए। मैं सबको अंदर बाहर से जानती हूँ। मैं किसी की भी शिकायत नहीं सुनने वाली।

पहला हिसाब। तुम कहाँ थे और कहाँ से कहाँ गए। बस ये देखते रहो। और वहाँ से कहाँ जाने का है, बस ये देखते रहो। आप जब कहीं रास्ते पर चल रहे हैं तो आप क्या यही कहते रहते हैं क्या? आप कहते हैं कि कब वहाँ पहुँचूंगा, कब वहाँ पहुँचूंगा। जो हमें सता रहा है उसे पहले माफ़ करके आओ। उसको बाहर, फिर देखो आप उसके अंदर। सब छोड़ो पिछला। हर एक क्षण पीछे छोड़ दो। इस क्षण में खड़े हो जाओ। अंदर घुसने की बात है। हम बैठे हुए हैं यहाँ पर ढकेलने के लिए सबको। मगर सब के सब मेरी खोपड़ी पर मत गिर जाना। दो चार गिरेंगे तो ठीक है, काहे का वाद विवाद सहजयोग में हो सकता है? अरे भई गर तुम्हारा आज्ञा पकड़ा है तो पकड़ा है हृदय पकड़ा है तो पकड़ा है। उसमें वाद-विवाद करना नहीं वो छूटना ही पड़ेगा। बुरा मानने की कौन सी बात है, जब पकड़ा है, तो पकड़ा है। छुड़वाना है तो छुड़वाना है। अरे अपने को अगर कैंसर हो, कैंसर हो गया है डॉक्टर के पास जाएंगे। डॉक्टर बोले कि आपको कैंसर हो गया है तो उसको क्या आप मारने को दौड़ेंगे कि उसने बोला आपको कैंसर हो गया, बोलेंगे कि भईया मुझे कैंसर हो गया है उसे ठीक कर दो।

उसी प्रकार आपका गर आज्ञा पकड़ा है तो आप क्या कहेंगे कि माँ ऐसे कैसे हो सकता है? कैसे पकड़ा है मेरा आज्ञा? अरे भाई है तो है। उसको तो छुड़वाना है। सहस्रार पर चक्कर है। कैसे चक्कर है? उसको तो छुड़वाना है। जो बुरी चीज है उसको तो निकालना है। काम खत्म। एक सीधी सादी बात है इसमें वाद-विवाद क्या और इसमें कहना सुनना क्या है? किसी के कहने सुनने से आज्ञा चक्र छूटता हो तो छुड़वा लो। वाद-विवाद से किसी का छूटता है तो छुड़वा लो। बातचीत से थोड़ी होने वाला है। ये सूक्ष्म से सूक्ष्मतर, ये प्रेम का चक्कर है। इससे होता है। आप लोग पार हुए हैं, वो कोई तुम्हारे वाद-विवाद से पार हुए हैं क्या? या तुम्हारी पंडिताई से, तुम्हारी किताबों से पार हुए हैं क्या? पार कैसे हो गए आप? एक चमत्कार घटित हुआ है और खट से पार हो गए। गगनगढ़ महाराज कहते थे न कि माताजी ये कैसे हुआ समझ में नहीं आता है कि आप आए और सबकी कुण्डलनियॉ खड़ी हो गई। ये तो समझ में ही नहीं आ रहा। एक को भी उन्होंने आजतक पार नहीं किया, गगनगढ़ महाराज ने और उनको जान देने के लिए हजारों आदमी तैयार हैं! (मराठी)

अपने यहाँ ऐसे बच्चे भी खराब हो जाएंगे क्योंकि हम लोग ही आधे अधूरे हैं। ऐसे पहुंचे हुए बच्चे हैं हिन्दुस्तान में भी बहुत हैं। वो भी सत्यानाश जाएंगे क्योंकि जबरदस्त माँ-बाप। उनको भी ठिकाने लगाइए। उनके भी मन में द्वेष भावना, उनके भी गन्दी बातें सिखाएंगे। पूरी समझ सुन सुन के, सुन सुन के बच्चे भी खराब हो जाएंगे। लेकिन वहाँ पर ऐसा नहीं है। वहाँ ऐसे जबरदस्त बच्चे हैं जो माँ-बाप से भी भिड़ लेते हैं इस बात पर। वो सब बच्चे तैयार हो रहे हैं। दस साल के अंदर वो बच्चे भी तैयार हो जाएंगे और आपके भी घर में ऐसे बच्चे

आएंगे और ऐसे बहुत से बच्चे हैं जो अपनी सत्ता पे खड़े हैं। जैसे ही ये बच्चे बड़े हो जाएंगे ये अपनी सत्ता पर खड़े हो जाएंगे। उनको सहयोग सिखाने की जरूरत नहीं। वो सीखे-सिखाए हैं, पुराने हैं, मेरे अपने हैं। लेकिन फिर यही कहूँगी कि आप लोग मील के पत्थर हैं, बम्बई वाले। (मराठी)

सबका कहना ये है कि सहजयोग में बड़े धीरे-धीरे लोग बढ़ते हैं। उसका कारण ये है कि आप लोगों को देख के लोग कहते हैं कि ये सहजयोगी हैं? भगवान बचाए इनसे। हमें नहीं चाहिए ऐसा सहजयोग। आप ही लोगों को देख करके सहजयोग बढ़ने वाला है। बहुत बार लोग कहते हैं कि इनके पीछे में सहजयोगी संस्था लगा दो। मैंने कहा नहीं नहीं ऐसा मत करो। ये तो भई ऐसा चिपक जाएगा मामला। किसी को ऐसे लगा नहीं सकते। कहने लगे क्यों? ये ऐसा है कि आज M.A. हैं तो कल बिल्कुल गधे। आज आकाश में हैं तो कल एकदम पाताल में। इसमें आप किसी को डिग्री नहीं दे सकते। आपने गर डिग्री दी तो मुश्किल हो जाएगी। ऐसा झगड़ा है। तो अब हम आ गए हैं अब बताइये क्या-क्या आपने सोचा है तथा क्या आपने करना है? आज आपने घर जाकर सोचना है।

महीने भर की छुट्टी लेकर जा रहे हैं। अभी दो दिन तो प्रोग्राम है ही देखते हैं क्या क्या उसमें आप करामात करते हैं। बढ़ाओ अपना चित्त। Meditation में बैठो तीन दिन। Meditation में जाकर ये कहो कि कौन कौन लोग ध्यान में क्या करेंगे। कौन कौन लोग ध्यान में आएंगे। चित्त लगाओ अपने चित्त पहचान करो। चित्त में ही सारी शक्ति है। चित्त को लगाओ कि ये भी आना चाहिए, वो भी आना चाहिए। ये भी आ सकता है वो भी आ सकता है। लगाओ चित्त। इसको भी आना चाहिए

उसको भी, सबको बंधन दो। आज घर पर जाकर बंधन दो। इसको भी आना चाहिए उसको भी आना चाहिए और आप खुद उपस्थित होकर सबको बंधन दो। परमात्मा का आशीर्वाद आपके उपर आएगा। किसी और इंसान से अपना Identification आप मत करो कि वे फलाने हैं ये इस जगह रहते हैं वो मेरे हैं, वो मेरे हैं, उनके साथ ये ज्यादाती हो गई। ये नहीं। मैं सहजयोग के लिए क्या कर सकता हूँ? फलाने आने चाहिए ढिकाने आने चाहिए। उधर चित्त लगाओ। आपके चित्त पे शक्ति बैठी हुई है।

चित्त पे शक्ति बैठी हुई है। उसको अगर गलत जगह पर लगाओगे तो सो जाएगी। सहजयोग में लगाओगे तो चमक जाएगी। इसको हमने ठीक किया था। उसको हमने ठीक किया था। उसकी बीमारी ठीक की थी, उससे मिले थे, उससे बातचीत की थी। उस पर आज बैठ कर चित्त लगाओ। अब मुझसे सहजयोग के अलावा कोई और बात करने की नहीं। मैं कुछ और सुनने को अब तैयार नहीं। बहुत हो गया। मेरी बीबी भाग गई। मेरा पति भाग गया। मेरे बच्चे का ठिकाना हो गया। ये अब सहजयोगियों से मैं सुनने वाली नहीं। बस बहुत हो गया। उसने मेरे को ऐसी कहा, उसने मेरे को डाँटा, उसने मेरे को मारा। मैं किसी से सुनने वाली नहीं और जिनको ये बातें करनी है वे अब छुट्टी करें सहजयोग से। जिसको आनंद लेना है वो यहाँ आएँ। जिसको प्रेम लेना है वो यहाँ आएँ। सारे संसार का सुख जिसे लेना है वो यहाँ आएँ। सारी सम्पदा परमात्मा ने जो तुम्हारे लिए उड़ेली हुई है, वो लेना है तो यहाँ आएँ। और आप लोग ही leader हैं। उस सतयुग के leader हैं जो आने वाला है। आपका नाम इतिहास में जाएगा। इतने महत्त कार्य में, गर आप इतने महत्त नहीं हैं तो आप न आएँ। पहली मर्तबा मैं ये कह रही हूँ।